कोंकणी साहित्य

डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र

गोवा में कोंकणी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने और उसकी अस्मिता को बनाए रखने में जिन कोंकणी साहित्य प्रेमियों, मनीषियों और चिंतकों का विशेष स्थान है, उनमें बाकीबाब बोरकार विशिष्ट हैं। वर्ष 2010 में उनका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। बाकीबाब बोरकार ने मराठी एवं कोंकणी दोनों भाषाओं में साहित्य का सर्जन किया है लेकिन उनकी अधिकांश रचनाएँ मराठी भाषा में मिलती हैं। वस्तुतः उस समय गोवा में मराठी का प्रभाव अधिक था और बाकीबाब बोरकार स्वयं भी मुंबई और पुणे में काफी दिन रहे।

बाकीबाब बोरकार का मूलनाम बालकृष्ण भगवंत बोरकार था। वर्ष 1910 में कुरचोरम गोवा में जन्मे बोरकार का जीवन बहुत ही संघर्षमय था। गोवा में अध्यापकीय जीवन से अपना कार्य प्रारंभ करते हुए उन्होंने वर्ष 1950 में गोवा मुक्ति आंदोलन में भाग लिया। इस दौरान वे साहित्य साधना तथा मराठी और कोंकणी साहित्य के सम्मेलनों और संगोष्ठियों में सक्रिय रूप से जुड़े रहे। साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में महनीय कार्य के लिए उन्हें वर्ष 1967 में पद्मश्री और वर्ष 1981 में साहित्य अकादमी सम्मान से विभूषित किया गया।

कला एवं संस्कृति विभाग, गोवा सरकार; गोवा कोंकणी अकादमी, आई. एम. बी. पणजी; कोंकणी, मराठी एवं हिंदी विभाग गोवा विश्वविद्यालय तथा गोवा की अन्य संस्थाओं द्वारा बाकीबाब के जन्मशती के अवसर पर अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

कोंकणी अकादमी ने उनके प्रसिद्ध *पांयजणां* और *सासाय* नामक दो काव्यसंग्रहों का पुनः प्रकाशन किया। पांयजणां काव्यसंग्रह की भूमिका गोवा कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष एन. शिवदास ने *अकादमीचे वतीन* शीर्षक से लिखी है। गोवा के मूर्धन्य साहित्यकार एवं प्रसिद्ध कोंकणी कवि स्वर्गीय मनोहरराय सरदेसाय द्वारा *सासाय* काव्यसंग्रह की मूल भूमिका को अकादमी ने उसी रूप में छापा है। गोवा के प्रति बाकीबाब का प्रेम उनकी इन पंक्तियों में झलकता है– *गोंय आमचें मूळपीठ, कोंकणी आमची भास/ कोंकणी संस्कृताय आमच्या जाण्टयांली मिरास/आंसूं आमी लागीं पैस खयं संवसारार/जैत तांकां हाडूंक आमी घोलूं आठय पार/तांच्या जपान तुटत चल्ले सगळ बंदपास।*

जयंती नायक ने गोवा में कोंकणी लोकसाहित्य को समृद्ध करने और उसे लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाने का स्तुत्य कार्य किया है। अब तक लोक कथा साहित्य पर उनकी पंद्रह पुस्तकें, बाल साहित्य पर सात पुस्तकें और दो कहानी–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इस वर्ष उनका *मिर्गवेणो* जीवन की विभिन्न अनुभूतियों को व्यक्त करता हुआ काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ है।

हम सभी जानते हैं कि स्वप्नों की अपनी एक अलग दुनिया होती है। मनुष्य रात में नाना प्रकार के स्वप्नों के संसार में डूबता और उतराता रहता है। इन स्वप्नों की अपनी अलग गंध होती हैं। सोनिया शाह ने इन्हीं गंधों को एकत्र करते हुए 70 कविताओं का संकलन *सपन गंध* नाम से प्रकाशित किया है। *सपन म्हजें फुलांचें/सपन म्हजें गंधांचें/मोरपांखां दोल्यांत म्हज्या/सपन मोर रंधाचें।* युवा कवि शाबा नारायण कुडतरकार की चौहत्तर कविताओं का काव्य संग्रह *वावझड* प्रकाशित हुआ।

बहुत ही कम उम्र में कोंकणी साहित्य को एक नई ऊँचाई तक पहुँचाने में युवा कथाकार प्रकाश पर्येकार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कहानी के साथ–साथ प्रकाश ने कोंकणी नाटक, निबंध एवं बाल काव्य लेखन भी किया है। इस वर्ष आपकी बाल कहानी की पुस्तक *कोल्यार्चीं नाडेपेन्नां* प्रकाशित हुई। गौरिश वेर्णेकार ने योगिता वेर्णेकार की *शून्य गिरतना,* मनोहरराय सरदेसाय की *शून्य ब्रह्मांड* एवं स्वयं की *शून्यांत* शीर्षक कविताओं का संकलन कर *शून्य* शीर्षक से कविता–संग्रह का संपादन किया है। शीला

खंबदकोण ने *खीसो भोर्नु हासों* कन्नड भाषा की गद्य एवं पद्य रचनाओं का कोंकणी में अनुवाद प्रस्तुत किया है।

कोंकणी कथा लेखन के क्षेत्र में अशोक कामत का विशेष योगदान रहा है। *घणाघाय नियतीचे* उपन्यास के बाद इनका *जुवारीचीं पायंजणां* नामक उपन्यास वर्ष 2010 में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक ने यह दर्शाया है कि विगत 50–60 वर्षों के गोवा के पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में नई और पुरानी पीढ़ी के बीच मूल्यों और परंपराओं को लेकर किस प्रकार से तनाव की स्थिति पैदा हो गई है।

दूसरे कथाकार देविदास कदम का *दिका* और *गांठवल* के बाद इस वर्ष तीसरा उपन्यास *उबंतर* आया है। इसकी कथाभूमि ग्रामीण जीवन के मनोभावों एवं उनके विचारों पर आधारित है जिसे लेखक ने लगभग तीन सौ पृष्ठों के व्यापक फलक पर चित्रित किया है। युवा कथाकार रामनाथ ग. गावडे की अभी तक एक नाटक और चार कथा की किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस वर्ष इनका *तळाचो फातर* (तलवे का पत्थर) उपन्यास आया। प्रस्तुत उपन्यास में आंचलिक संस्कृति पर हावी होते हुए औद्योगिकीकरण को दिखाया गया है। इसमें दत्तू किसान अपने खेत से पत्थर निकालने के लिए अपना खेत कल्लप्पा मुकादम को देता है ताकि वह उससे रुपया प्राप्त कर सके। इस कथा में लेखक ने व्यक्तिगत मनोगत विचारों, भावों, आंदोलनों, संघर्षों, दुःखों आदि को लेकर उपन्यास का तानाबाना बुना है। लेखक ने इसे एक प्रभावकारी वातावरण के निर्माण द्वारा सुंदर शैली में व्यक्त किया है।

नरेश नायक का ग्यारह कहानियों का संग्रह *गाँवमन* शीर्षक से आया जिसमें कथाकार ने *आवय ती आवय, कोणालो कोण, शिराप, उज्या कीट, अणभव* आदि कहानियों में अपने जीवन के अनुभवों, गोवा मुक्ति के बाद गोवा के समाज में आए बदलावों और मूल रूप से गँवई मन की परिवर्तित दशाओं का चित्रण किया है। *चूक, जैत, दिश्वांटो, ताची कथा, नशीब, सावित्रा, विपरीत* आदि कुल ग्यारह कहानियों का *निर्णय* शीर्षक से युवा महिला कथाकार जोफा गोन्साल्वीस का कथा–संग्रह आया है। इन कथाओं में लेखिका ने गोवा के सामाजिक जीवन में शोषक–शोषण व्यवस्था एवं अपने जीवन के विविध अनुभवों को व्यक्त किया है।

796 CHD/13-2

युवा नाटककार प्रो. राजय पवार का *नाटक एका नाटकाचें* पाँचवां नाटक है। यह मूलतः गोवा में मराठी नाटक के रंगमंच की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। यहाँ गाँव की नाटक मंडलियाँ, जिनकी मातृभाषा जन्म से कोंकणी है और वे मराठी में नाटक करते समय संवाद के अंतर्गत किस प्रकार की भाषिक भूलें करतें हैं लेखक ने उसे हास्य एवं व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह एक कॉमेडी नाटक है।

शाबा कुडतरकार के *वावझड* कविता–संग्रह के बाद इस वर्ष *भुंयगर्भ* और *तानसुर्या* नाम से दो एकांकी–संग्रह प्रकाशित हुए। *भुंयगर्भ* में *भुतांवळो, इंप्रोवायझेशन, कुड्डेगाळ, भुंयगर्भ, रचयिल्ली काणी* नाम से कुल पाँच और *तानसुर्या में दुदीन सडो, एक कथा व्यथा, चलता वाट अश्वत्थामा, कोणतरी, तानसूर्या और सायकोसिस* शीर्षक से कुल छह एकांकी संकलित हैं। इन एकांकियों की कथावस्तु गोवा के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन, राजनैतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक आदि संदर्भों पर आधारित है।

गोवा में तियात्र की एक लंबी परंपरा रही है। पहले इसका स्वरूप विशुद्ध रुप से धार्मिक और सामाजिक होता था। अब धीरे–धीरे मीडिया के प्रभाव के कारण इसे मनोरंजक रूप दिया जा रहा है। वर्ष 2007–08 में तियात्र लेखन के लिए पुरस्कार प्राप्त करने वाले बेनिसीयों वितोरीन पेरैरा का इस वर्ष *आशिर्वाद* नाम से तियात्र प्रकाशित हुआ।

कोंकणी साहित्य की अन्य विधाओं के अंतर्गत दिलीप बोरकार ने *बाकी विशेष* नाम से पुस्तक प्रकाशित की है। इसके अंतर्गत उन्होंने बाकीबाब बोरकार की कोंकणी, मराठी और हिंदी कविता पर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की है। *अपनी तार सितार बजावों/दिल चाहे सो गावो/इस जग की रजी, इतराजी, उस/धुन में भुल जावो!।* कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर दिलीप बोरकार की अभी तक लगभग 15 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

माधवी सरदेसाय ने कोंकणी के मूर्धन्य रचनाकार और मूलतः निबंधकार रवींद्र केळेकार के व्यक्तिपरक, प्रेम, प्रकृति, राष्ट्र, धर्म, जीवन–जगत से संबंधित 50 निबंधों की संकलित पुस्तक *कषाय मधुर* नाम से संपादित की है। युवा कोंकणी साहित्यकार प्रकाश रमाकांत बजरीकार की कोंकणी समीक्षा पुस्तक *वज्रघात* आई है। यह पुस्तक दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग के अंतर्गत कोंकणी कविता, कथा, नाटक, निबंध, बालसाहित्य आदि तथा दूसरे भाग में कोंकणी साहित्यकारों की प्रमुख कृतियों पर उनके समीक्षात्मक लेख हैं।

दिलीप बोरकार ने मनीषी एवं चिंतक रवींद्र केळेकार के जीवन–चरित पर *श्रेयार्थी* नाम से कोंकणी में पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसे वर्ष 2010 में कोंकणी की सुप्रसिद्ध समीक्षक किरन बुडकुळे ने अंग्रेजी में अनुवाद कर प्रकाशित किया है। *अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा बदलत्या जगाचो* तथा *सक्सेस पासवर्ड* मराठी पुस्तकों का अनुवाद ज्योति कुंकळकार ने कोंकणी में किया है।

इस वर्ष विभिन्न रोगों एवं चिकित्सा से संबंधित क्रमशः डॉ. भिकाजी घाणेकार की *आमचो दोतोर*, डॉ. दिनेश खंवटे की *कान भेड्डेपण आनी उपाय* और डॉ. अर्चना गांवकार की *वखदी वनस्पति* नाम से तीन पुस्तकें प्रकाशित हुईं। विन्सी क्वाद्रूस ने पहले और दूसरे बालसाहित्य सम्मेलन की पुरस्कृत रचनाओं का संकलन कर *बालांकूर–2010* नाम से एक लघु पुस्तक प्रकाशित की है। नारायण झांटये महाविद्यालय और गोवा कोंकणी अकादमी के सौजन्य से 14–15 फरवरी 2009 में संपन्न हुए युवा कोंकणी साहित्य सम्मेलन की समस्त रिपोर्ट एवं उस अवसर पर प्रस्तुत किए गए कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लेखों का संकलन कर प्रो. हनुमंत चं. चोपडेकार ने *युवांकूर–2010* शीर्षक से प्रकाशित करवाया।

कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं में पुस्तकों के प्रकाशन के साथ–साथ यहाँ पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रहा है। अभी भी यहाँ अंग्रेजी और मराठी भाषा का प्रभुत्व बना हुआ है। इसके पीछे ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारण हैं। गोवा से एक मात्र दैनिक *सुनापरांत* निकलता है। कोंकणी पत्रिकाओं में मासिक *जाग* विगत 36 वर्षों से प्रो. माधवी सरदेसाय के कुशल संपादन में *जाग* कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं को समृद्ध कर रहा है। जाग प्रत्येक वर्ष दिवाली–क्रिसमस एवं रचनाकार विशेष पर विशेषांक निकालता है। इसके अतिरिक्त *बिंब, ऋतु, कोंकण टाइम्स, गोवापुरी, गुलाब, जैत, शोध, उर्बा, बारदेश, चवथ* आदि कई नियमित एवं अनियमित पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। इस वर्ष बहुभाषी *गोवा पुरी* त्रैमासिक पत्रिका के संपादन का कार्य कोंकणी के सुप्रसिद्ध कवि श्री रमेश भ. वेळुस्कार को दिया गया है।

वर्ष 2006 का 42वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार कोंकणी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री रवींद्र केळेकार को 31 जुलाई 2010 को गोवा कला अकादमी के सभागार में लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमारि के हाथों प्रदान किया गया। इस

अवसर पर ज्ञानपीठ संस्था के निदेशक एवं हिंदी के साहित्यकार श्री रवींद्र कालिया, ओड़िया के साहित्यकार सीताकांत महापात्र एवं हिंदी के मूर्धन्य आलोचक प्रो. नामवर सिंह उपस्थित थे। *बिम्ब* मासिक पत्रिका का अगस्त 2010 का अंक उक्त पुरस्कार समारोह पर केंद्रित था।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने उक्त सभागार में 20 अगस्त 2010 को वर्ष 2009 के अनुवाद पुरस्कार समारोह का आयोजन किया जिसमें 23 भारतीय भाषाओं की साहित्यिक अनूदित कृतियों के लिए अनुवादकों को पुरस्कृत किया गया। कोंकणी के लिए यह पुरस्कार *अरण्याचो अधिकार* अनूदित पुस्तक पर श्रीमती कस्तूरी देसाई को दिया गया जिन्होंने महाश्वेतादेवी की बंगला कृति *अरण्येर अधिकार* का कोंकणी में अनुवाद किया था। इस अवसर पर साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय एवं मुख्य अतिथि के रूप में मलयालम के प्रख्यात साहित्यकार श्री एम. टी. वासुदेवन नायर मौजूद थे। साहित्य अकादमी ने इसी वर्ष से विभिन्न भारतीय भाषाओं में बालसाहित्य पुरस्कार की घोषणा की। वर्ष 2010 का साहित्य अकादमी एवं बालसाहित्य पुरस्कार क्रमशः अरुण साखरदांडे को *कावल्याचे श्रादध* एवं प्रकाश पर्येकार को *इगडी–बिगडी–तिगडी था* पुस्तक के लिए प्रदान किया गया।

विश्व कोंकणी साहित्य अकादमी ने वर्ष 2010 से विश्व कोंकणी साहित्य पुरस्कार की घोषणा की। यह पुरस्कार प्रख्यात कोंकणी कथाकार श्री महाबलेश्वर सैल को उनके उपन्यास *हावठण* के लिए तथा युवा साहित्य पुरस्कार प्रो. राजय पवार को प्रदान किया गया।

गोवा कोंकणी अकादमी; कोंकणी भाषा मंडल; गोवा कला अकादमी; आई. एम. बी. तोमास स्टिवन्स कोंकणी केंद्र, कला एवं संस्कृति विभाग, गोवा सरकार; कोंकणी विभाग; गोवा विश्वविद्यालय आदि कोंकणी साहित्य एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन में सराहनीय कार्य कर रही हैं। इन संस्थाओं में गोवा कोंकणी अकादमी एवं कला एवं संस्कृति विभाग, गोवा सरकार की विभिन्न आर्थिक सहयोग की योजनाओं के कारण कोंकणी साहित्य समृद्ध हो रहा है।

* * *